একুশের ঢেউ EKUSHER DHEU

ISSN: 2454-7182
IMPACT FACTOR: 8.158

An International Online Indexed Research Journal of Language, Literature and Culture covering Arts & Humanities as a broad area (Peer-reviewed, Refereed Journal, Quarterly)

मनोहर श्याम जोशी के गद्य साहित्य में सामाजिक यथार्थ

(Manohar Shyam Joshi ke gadya sahitya mein samajik yatharth)

Name of the Author: Sumit Yadav

Affiliation: Research Scholar, Department of Hindi, Kazi Nazrul University, West Bengal, India

Abstract: In Hindi fiction, Manohar Shyam Joshi emerges as a distinguished writer whose works present a balanced synthesis of social realism, ideological conflict, linguistic experimentation, and psychological subtlety. He was equally active as a novelist, satirist, screenwriter, journalist, and social analyst. His literature offers an analytical portrayal of the regional sensibilities of Uttarakhand, the complexities of metropolitan life, caste and social structures, and the disintegration of family systems. His writings not only bring forth the problems of various classes and communities in society but also provide deep insight into the emotional world and value system of individuals in changing times.

Among his major novels, Kasap challenges traditional frameworks of love, family, and women's independence, while Kyap presents a sharp awareness of Dalit identity, ideological disillusionment, and inner conflict. Kuru Kuru Swaha is a postmodern experiment that breaks conventions at the levels of language, form, and thought. In Hariya Hercules Ki Hairani, there is a subtle depiction of the memories, factionalism, and psychological fragmentation of the Kumaoni migrant community. Similarly, *Silver Wedding* poignantly presents the hollowness of modernity and the neglect of the elderly. The television serial Hum Log realistically portrays the everyday life, struggles, and aspirations of a middle-class Indian family, expressing with sensitivity the changing values and transitional mindset of society.Thus, the prose of Manohar Shyam Joshi not only reflects social reality but also offers a new perspective on it.

Keywords:- Social, Modernity, Postmodernity, Middle Class, and Rural

मनोहर श्याम जोशी के गद्य साहित्य में सामाजिक यथार्थ

सुमित यादव

हिन्दी साहित्य के विविध विधाओं में लेखन करने वाले साहित्यकारों की श्रेणी में मनोहर श्याम जोशी का नाम अत्यंत सम्मान के साथ लिया जाता है। यद्यपि उन्हें बहुधा एक व्यंग्यकार, पटकथाकार और टीवी धारावाहिक लेखक के रूप में जाना गया, लेकिन उनके कथा साहित्य विशेषतः उपन्यासों और कहानियों ने उन्हें हिंदी साहित्य के उत्तर आधुनिक परिदृश्य में एक विचारशील और प्रयोगधर्मी रचनाकार के रूप में स्थापित किया। मनोहर श्याम जोशी का कथा साहित्य बहुआयामी है। विषय, भाषा, दृष्टिकोण और संरचना इन चारों स्तरों पर। उन्होंने अपनी रचनाओं में भारतीय समाज की जटिलताओं, आंतरिक तनावों, सांस्कृतिक टकरावों, विचारधारात्मक भ्रमों और आत्मसंघर्षों को जितनी गहराई और व्यंजनात्मकता के साथ चित्रित किया है, वह हिंदी कथा साहित्य में विरल है।

मनोहर श्याम जोशी के उपन्यासों में यथार्थ साफ-साफ दिखाई देता है। यथार्थ का अर्थ है - 'जिसका अस्तित्व वास्तव में है।' इसको परिभाषित करते हुए आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने विचार और वितर्क में लिखा है कि- "कविता यथार्थवाद की उपेक्षा कर सकती है। संगीत यथार्थ को छोड़कर भी की जा सकती है पर उपन्यास और कहानी के लिए यथार्थ प्राण हैं।"[1] मनोहर श्याम जोशी के उपन्यासों में कुमाऊँनी प्रदेश के आंचलिक जीवन और मध्यवर्गीय परिवारों का यथार्थ चित्रण मिलता है। उन्होंने अपने समय के बदलते समाज का अत्यंत सजीव वर्णन किया है।

मनोहर श्याम जोशी का लेखन उस दौर में उभरा जब हिंदी साहित्य नई वैचारिक और शिल्पगत चुनौतियों से जूझ रहा था। साठोत्तरी कहानी आंदोलन ने जहाँ सामाजिक विडंबनाओं और व्यक्तिगत अस्मिताओं को केंद्र में रखा, वहीं 1980 के बाद का उपन्यास उत्तर आधुनिक विमर्श, आत्मबिंबीय संरचना और भाषिक प्रयोगशीलता की ओर मुड़ा। इस पृष्ठभूमि में जोशी का कथा साहित्य न केवल एक सेतु का कार्य करता है, बल्कि अनेक अर्थों में हिंदी उपन्यास को एक नई दिशा देता है। उनका लेखन परंपरा और आधुनिकता, स्थानीयता और वैश्विकता, आंचलिकता और बौद्धिकता, व्यंग्य और दार्शनिकता के मध्य एक संवाद रचता है। उनकी कथाएँ एक ओर कुमाउनी लोकसंस्कृति, दलित अस्मिता और पारिवारिक जीवन के भीतर की दरारों को सामने लाती हैं, तो दूसरी ओर वैश्विक विचारधाराओं, आत्मचिंतन और सामाजिक संस्थाओं की आलोचना भी करती हैं। मनोहर श्याम जोशी का प्रथम उपन्यास 'कुरु कुरु स्वाहा' (1980) उत्तर आधुनिक हिंदी उपन्यास की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम माना गया है। इसका कथानक बंबई जैसे महानगर की आपाधापी भरी दुनिया में रचा गया है, जहाँ एक ओर देह व्यापार की विद्रूपता है तो दूसरी ओर आधुनिकता

और परंपरा का विडंबनात्मक समागम। उपन्यास के प्रमुख पात्र - 'मैं', 'जोशी जी', 'मनोहरश्याम जोशी' (लेखक रूप में), और 'पहुँचेली' नामक स्त्री आत्मचिंतन, पहेलीनुमा संवादों और व्यंग्यात्मक टकरावों के माध्यम से कथा को बहुआयामी बनाते हैं। ये पात्र एक-दूसरे के प्रतिबिंब हैं और 'थ्री इन वन' संरचना में लेखक ने आत्मान्वेषण के विभिन्न स्तरों को समेटा है। कथानक पारंपरिक रूप से क्रमबद्ध नहीं, बल्कि विखंडित और बिखरा हुआ है, जो उत्तर आधुनिक शैली की पहचान है। संवादों में गहराई के साथ-साथ खिलंदड़ता, आत्मविनोद और सामाजिक-राजनीतिक व्यंग्य समाहित हैं। पहुँचेली पात्र के माध्यम से स्त्री की जटिल सत्ता, उसकी पीड़ा और उसकी संभावना को प्रतीक रूप में प्रस्तुत किया गया है। भाषिक दृष्टि से उपन्यास बहुभाषिक है, जिसमें हिंदी के विविध जनपदीय स्वर (कुमाउनी, भोजपुरी, हरियाणवी, गुजराती) के साथ-साथ उर्दू, अंग्रेज़ी और बंबईया गली-मोहल्लों की बोलियाँ भी स्थान पाती हैं। कुल मिलाकर, 'कुरु कुरु स्वाहा' एक ऐसा प्रयोगधर्मी उपन्यास है, जो कथा, पात्र, भाषा और विचार सभी स्तरों पर रूढ़ियों को तोड़ते हुए हिंदी उपन्यास को एक नवीन दिशाबोध प्रदान करता है।

'कसप' केवल एक प्रेम कथा नहीं है, बल्कि उत्तर आधुनिक भारतीय समाज की सामाजिक, सांस्कृतिक, पारिवारिक और भाषिक विविधताओं को समेटे एक बहुआयामी उपन्यास है। यह उत्तराखंड के ग्रामीण और शहरी जीवन, मध्यवर्गीय मानसिकता, स्त्री स्वतंत्रता, पारिवारिक मर्यादाएं, और प्रेम की विफलता जैसे गहन विषयों को समेटता है। कथानायक डी.डी. और कथानायिका बेबी उर्फ मैत्रेयी की प्रेम कथा एक स्वाभाविक आकर्षण से आरंभ होती है। शुरू में यह किशोर मन की चंचलता और उत्सुकता प्रतीत होती है, लेकिन जैसे-जैसे कथा आगे बढ़ती है, यह आकर्षण पारिवारिक विरोध, सामाजिक मर्यादा और व्यक्तिगत स्वतंत्रता की जटिलताओं में उलझता जाता है। शास्त्री जी और शास्त्रानी के चरित्र उस पुरानी पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो रूढ़ियों और प्रतिष्ठा की रक्षा के लिए बच्चों की भावनाओं को नकार देती है। कथानायिका केवल एक प्रेमिका नहीं, बल्कि विचारशील, सशक्त और निर्णायक स्त्री के रूप में उभरती है। जब लड़के को रिजेक्ट करती है। तब उनके घर वाले कहते हैं, तुम्हारे लिए कृष्ण भगवान कहां से लाएं ? उसी समय बेबी टिप्पणी करती है, "किशन भगवान रिजेक्ट ! काले हैं और सोल सौ पहले से ही रख रखी उन्होंने।"[2]

प्रेम के लिए उसका विद्रोह, गणानाथ मंदिर में आमंत्रण, परिवार से टकराव, और विवाह की घोषणा उसे एक परंपरा तोड़ती स्त्री बना देता है। जब नायक कैरियर को प्राथमिकता देता है, तो वह खुद ही उस प्रेम संबंध को समाप्त कर देती है और अपने को "विधवा" कहकर उस मोहभंग को स्वीकार करती है। यह उपन्यास प्रेम, विवाह और स्त्री-पुरुष संबंधों के पारंपरिक ढाँचों को तोड़ता है और उत्तर आधुनिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। “शास्त्रानी जी समझा रही हैं कि हम कहीं के नहीं रह जायेंगे बेटे। समाज में एक बार कालिख पुतवा ही चुके हो

तुम दोनों मिलकर शास्त्री-परिवार के चेहरे पर..."[3] इसमें 'नकार का स्वर' प्रमुख है जैसे धार्मिकता, पारिवारिक मर्यादा, सामाजिक प्रतिष्ठा, सबका अस्वीकार। साथ ही, प्रेम का भी आदर्शवादी रूप नकारा गया है। नायक का अमेरिका जाना और नायिका का सामाजिक क्षेत्र में प्रतिष्ठित बनना, दोनों की राहें अलग हो जाती हैं।

मनोहर श्याम जोशी का 'क्याप' उपन्यास उत्तराखंड की सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक जटिलताओं को आंचलिक संवेदना के साथ उकेरता है। यह कृति केवल एक दलित युवक की आत्मकथा नहीं, बल्कि विचारधाराओं, अस्मिताओं और मानवीय आकांक्षाओं के द्वंद्व का आख्यान है। उपन्यास का मुख्य पात्र 'मैं' एक प्रतिभाशाली दलित युवक है, जो समाज में व्याप्त जातिगत भेदभाव, सामाजिक उपेक्षा और सवर्णों की दोहरी नैतिकता से निरंतर जूझता है। गाँधीवाद और मार्क्सवाद के बीच उसका अंतर्द्वंद उपन्यास का प्रमुख वैचारिक विमर्श रचता है। गाँधी के 'सहिष्णुता और त्याग' के संदेश को वह संदेह की दृष्टि से देखता है, वहीं अपने कम्युनिस्ट चाचा से प्रेरित होकर मार्क्सवादी क्रांति की ओर आकर्षित होता है। किंतु भारतीय सामाजिक संरचना में मार्क्सवाद की विफलता और पार्टी के भीतर की वैयक्तिक स्वार्थपरक राजनीति उसे गहरे मोहभंग की ओर ले जाती है। सवर्ण युवती उत्तरा से प्रेम संबंध, सामाजिक अस्वीकार्यता और प्रेमिका की आत्महत्या, उसे भीतर तक तोड़ देते हैं। 'मैं' चरित्र न केवल सामाजिक उपेक्षा का शिकार है, बल्कि दलित अस्मिता के साथ अपनी प्रतिभा और विद्रोह की चेतना के कारण भी आत्मसंघर्ष से ग्रस्त है। अंततः वह अपने गाँव लौटकर क्रांतिकारी संगठन का निर्माण करता है, किंतु संगठन भी अंतर्विरोधों से ग्रसित होकर विघटित होता है। इस विफलता और निरंतर टूटन के बीच वह लोक जीवन की सहजता, लोक कथाओं की उदासी और जीवन की मौलिक सादगी की ओर लौटता है। यह उपन्यास वस्तुतः विचारधारात्मक संकट, दलित विमर्श, उत्तर-आधुनिक समाज के विघटन और आंचलिक संस्कृति की पुनराविष्कार यात्रा का सजीव साहित्यिक दस्तावेज है, जिसे मनोहर श्याम जोशी ने अत्यंत प्रखरता और मौलिकता के साथ रचा है।

'हरिया हरक्यूलिस की हैरानी' उत्तर आधुनिक उपन्यास है, जो प्रवासी कुमाऊनी समाज के भीतर बनने-बिगड़ने वाले पारिवारिक संघर्षों और सांस्कृतिक संक्रमणों को अत्यंत प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करता है। उपन्यास का केंद्रीय पात्र हरिया एक ऐसा नवयुवक है, जो आरंभ में किसी भी बात पर हैरान नहीं होता, परंतु जैसे-जैसे कथानक आगे बढ़ता है, वह गूढ़ और रहस्यमय परिस्थितियों के संघर्षों में उलझता है और उसकी हैरानी धीरे-धीरे गहराती जाती है। कथा का केंद्र गुमालिंग की पौराणिक मान्यता के इर्द-गिर्द घूमता है, जिसे अतुल और बन्नो के माध्यम से हरिया के जीवन में लाया गया है। घुघुती-लिंग की जानकारी उसके पिता राय सैप के मन में दबी हुई आकांक्षाओं को उजागर करती है, और यही आकांक्षा हरिया की हैरानी को मानसिक असंतुलन तक पहुँचा देती है। इसी गहराई से हैरान पात्र के माध्यम से जोशी आधुनिक जीवन की जटिलताओं, विश्वासों के

टूटने और नई पीढ़ी की विडंबनात्मक परिस्थितियों को चित्रित करते हैं। पिता की मृत्यु के बाद हेमंत नामक नवयुवक के रूप में एक नई पीढ़ी का चरित्र सामने आता है, जो केवल संपत्ति को लेकर संघर्ष करता है। हेमंत और हरिया के बीच उत्पन्न विवाद प्रवासी कुमाऊनी समाज में विभिन्न गुटों को जन्म देता है, कुछ हरिया के पक्ष में, कुछ हेमंत के और कुछ तथास्त रहकर उनकी मानसिक स्थितियों को ही हैरानी का कारण मानते हैं।

उपन्यास में पीरुली जैसी स्त्री का चरित्र नारी-विमर्श की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। वह परंपरागत कुमाऊनी समाज की सीमाओं को लाँघती हुई एक केंद्रीय स्त्री-चरित्र के रूप में सामने आती है। वहीं, डॉ. नीलांबर जैसे पात्र आधुनिक और वैज्ञानिक सोच का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो परंपरागत मान्यताओं का विरोध करते हैं। मुरलीधर जीव जैसे पात्र के माध्यम से बिरादरी-हित की अवधारणा प्रस्तुत की गई है। यहाँ यह विचार रखा गया है कि जब सत्य और झूठ का निर्माण संभव हो, तो वह सत्य चुना जाना चाहिए जो बिरादरी को अच्छाई की ओर ले जाए।

'सिल्वर वेडिंग' मनोहर श्याम जोशी की एक प्रभावशाली कहानी है, जो परम्परा और आधुनिकता के बीच गहरे अन्तर्द्वंद्व को उजागर करती है। यह कथा यशोधर बाबू की है, जो एक साधारण चपरासी से सेवानिवृत्त अधिकारी बने हैं। उनका जीवन मूल्यों, आदर्शों और परम्पराओं से जुड़ा हुआ है, जबकि उनके परिवार के सदस्य आधुनिक जीवनशैली और पश्चिमी सोच से प्रभावित हैं। यशोधर बाबू के बच्चे ऊँचे पदों पर कार्यरत हैं और उनकी सोच आधुनिक है। उनकी पत्नी भी अब पुराने संस्कारों को केवल सुविधा की सीमा तक स्वीकारती हैं। इस पीढ़ी-अन्तर की टकराहट उस समय चरम पर पहुँचती है जब यशोधर बाबू के 'सिल्वर वेडिंग' के अवसर पर परिवार एक आधुनिक पार्टी का आयोजन करता है, जिससे वे अनभिज्ञ रहते हैं। पार्टी में आधुनिक परिधान, शराब और शिष्टाचार के नाम पर औपचारिकता का प्रदर्शन होता है। सबसे मार्मिक क्षण वह होता है जब उनके पुत्र द्वारा उपहार में दिया गया गाउन यह संकेत देता है कि अब वे उसी को पहन कर दूध लाने जाया करें, पर कोई यह नहीं कहता कि अब से दूध हम लाया करेंगे। कहानी आधुनिकता के खोखलेपन, पारिवारिक संवेदनाओं के क्षरण, और वृद्धों की उपेक्षा को अत्यंत मार्मिकता से चित्रित करती है। यशोधर बाबू अपने भीतर टूटते हैं, परन्तु उनकी परम्परा-निष्ठा और नैतिकता उन्हें एक आंतरिक गरिमा प्रदान करती है। यह कहानी समकालीन समाज में मूल्यों के संक्रमण और भावनात्मक विघटन की सजीव अभिव्यक्ति है।

'हम लोग' मनोहर श्याम जोशी द्वारा रचित पहला भारतीय धारावाहिक था, जिसे दूरदर्शन पर प्रसारित किया गया। यह केवल एक पारिवारिक कथा नहीं, बल्कि भारतीय समाज का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करने वाला गहन सामाजिक दस्तावेज़ है। इसी संदर्भ में निर्देशक स्वयं कहते हैं कि - "हम लोग के विषय में क्या कहूं यह तो एक दर्पण है हम सब का।"[4] इस धारावाहिक की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह आम आदमी की

चिंताओं, संघर्षों, आशाओं और टूटनों को उसी की भाषा और भावनाओं में प्रस्तुत करता है। धारावाहिक का केंद्र एक संयुक्त परिवार है, जहाँ हर सदस्य एक सामाजिक वर्ग, विचारधारा या मानसिकता का प्रतिनिधि प्रतीत होता है। बसेसर राम का चरित्र नशाखोरी की समस्या को सजीव बनाता है। शराब में डूबा उसका जीवन पारिवारिक कलह और आत्मविनाश का प्रतीक बन जाता है। वहीं उसकी पत्नी भगवन्ती एक परंपरावादी नारी होते हुए भी पति को सुधारने का निरंतर प्रयास करती है। दहेज की समस्या धारावाहिक की एक और प्रमुख चिंता है। बसेसर राम की बेटी बड़की के विवाह में बार-बार बाधाएँ आती हैं क्योंकि दहेज की माँग पूरी नहीं हो पाती। अंततः उसकी शादी एक अधेड़ विधुर से तय कर दी जाती है, लेकिन भगवन्ती के प्रयासों से यह रिश्ता टूट जाता है। इसी प्रकार मझली की शादी की चिंता भी एक सामाजिक दबाव के रूप में परिवार पर बनी रहती है। धारावाहिक में नारी के बदलते स्वरूप को भी दर्शाया गया है। बड़की और छोटकी आधुनिक सोच रखने वाली लड़कियाँ हैं, "तुब काम करना चाहती हो गुणवन्ती और काम कोई पाप तो नहीं अपने निर्णय खुद भी लेने का पूरा-पूरा अधिकार है तुम्हें, एक बार हिम्मत करोगी तो हर रास्ता खुद-व-खुद आसान होता नजर आएगा वेसे हर फैसला तुम्हारे अपने हाथ में है।"[5] जो आत्मनिर्भर बनने का सपना देखती हैं और इसके लिए सामाजिक बंधनों को चुनौती देती हैं। इसके साथ ही, समाज में मौजूद समाज-विरोधी तत्व जैसे त्रिभुवन पांडे, सेठ किशोरीलाल आदि, भोली-भाली लड़कियों को बहलाकर उनका शोषण करते हैं, युवाओं को अपराध की ओर धकेलते हैं। पुलिस प्रशासन की निष्क्रियता और कुछ ईमानदार अधिकारियों के प्रयास भी इसमें संतुलन के साथ दर्शाए गए हैं। 'हम लोग' परिवार, रिश्ते, सामाजिक मूल्य, समस्याएँ और संभावनाओं का एक जीवंत दर्पण है, जो समाज को आईना दिखाने का कार्य करता है।

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि मनोहर श्याम जोशी एक सफल उपन्यासकर, पटकथाकार लेखक रहे हैं। जिन्होंने अपने समय के बदलते रूप को बहुत ही सुंदर रूप से अपने साहित्य में वर्णन किया है। उच्च मध्यवर्गीय परिवार की स्थिति हो या निम्न मध्यवर्गीय परिवार की स्थिति बहुत ही साफगोई के साथ इसका वर्णन अपने उपन्यासों और पटकथा लेखन में करते हैं। इन्होंने अपने एक साक्षात्कार में कहा भी है कि वे जितना सोचते हैं उतना लिख नहीं पाते हैं। उन्हें इस बात का हमेशा अफसोस था कि उन्होंने बहुत देर से लिखना आरंभ किया। एक साक्षात्कार में जोशी जी बताते हैं कि उनके गुरु अमृतलाल नागर और अज्ञेय रहे हैं। जिनका मार्गदर्शन उन्हें हमेशा मिलता रहा। अज्ञेय जोशी जी को तार सप्तक के कवियों में भी शामिल करना चाहते थे, लेकिन उनके पास वह पत्र ही बहुत लेट से पहुंचा। जिसका जवाब वह कभी दे ही नहीं पाए। बहुत लेट से लिखने के बाद भी इन्होंने हिंदी साहित्य में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। जिस समय भारतीय समाज पूरी तरह से आधुनिक नहीं बन पाया था उस समय मनोहर श्याम जोशी ने उत्तर आधुनिक समाज के

बारे में लिखकर साहित्य को एक नई दिशा दिखाई। इसका वर्णन कसप उपन्यास में देखने को मिलता है। मनोहर श्याम जोशी की भाषा बहुरंगी है। वह साहित्यिक हिंदी से लेकर बोलचाल की बंबईया, कुमाउनी, संस्कृत, उर्दू और अंग्रेज़ी के मेलजोल से बनी एक जीवंत और बहुस्तरीय भाषा का प्रयोग करते हैं। यह भाषा पात्रों की सामाजिक स्थिति, मानसिकता और भावभूमि के अनुसार बदलती है। उनकी शैली में आत्मकथात्मकता, संवाद प्रधानता, विनोदप्रियता, व्यंग्य और दार्शनिक आत्ममंथन का अद्भुत समन्वय मिलता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची-

1. द्विवेदी, आचार्य हजारी प्रसाद, विचार और वितरक, साहित्य भवन लिमिटेड, इलाहाबाद, पृष्ठ संख्या-103
2. जोशी, मनोहर श्याम, कसप, राधा कृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण- 2010, पृष्ठ संख्या- 16
3. वहीं, पृष्ठ संख्या -249
4. जोशी, मनोहर श्याम, हम लोग, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या -5
5. वहीं, पृष्ठ संख्या- 96